MAKTABATUL MADINA INDIA

Lambi Umr Pane Ka Nuskha (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 449
Weekly Booklet : 449

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 20 साल पहले का बयान

लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा

सफ़हात : 20

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला "लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा" पढ़ या सुन ले उसे ईमान व आ़फ़िय्यत वाली और नेकियों भरी लम्बी ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे और सब से आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر، ص87، حدیث:1406)

दुखों ने तुम को जो घेरा है तो दुरूद पढ़ो जो ह़ाज़िरी की तमन्ना है तो दुरूद पढ़ो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना दाऊद عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में एक ख़ूबरू दुल्हा ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने जो कि वहां मौजूद थे पूछा : येह जवान कौन है ? फ़रमाया : इस की आज ही शादी हुई है चूंकि मुझ से बे पनाह मह़ब्बत करता है इस लिये मुझ से मुलाक़ात किये बग़ैर अपनी दुल्हन के पास जाना गवारा न किया लिहाज़ा मिलने आया है, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : ऐ दाऊद ! इस दुल्हे की उ़म्र सिर्फ़ छे दिन बाक़ी रह गई है ! येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना दाऊद

---

[1]...19 रबीउ़ल अव्वल 1426 हिजरी, 28 अप्रैल 2005 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान।

عَلَيْهِ السَّلَام रंजीदा हो गए, इस वाक़िए को सात माह गुज़र गए मगर वोह नौजवान फ़ौत न हुवा, इसी दौरान मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत ! वोह नौजवान अभी तक ज़िन्दा है ! मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाबन कहा : जब मैं ने छे दिन के बाद उस की रूह़ क़ब्ज़ करनी चाही तो अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत ! मेरे बन्दे को छोड़ दो क्यूंकि जब येह (ह़ज़रते) दाऊद (عَلَيْهِ السَّلَام) के पास से हो कर बाहर निकला और उस ने एक लाचार फ़क़ीर को पाया तो उस को अपनी ज़कात दे दी, उस मोह़ताज ने ख़ुश हो कर उस को दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर और जन्नत में (ह़ज़रते) दाऊद (عَلَيْهِ السَّلَام) का पड़ोसी बनाए जाने की दुआ दी, मैं ने दुआ क़बूल फ़रमा ली और उस नौ जवान के लिये उन छे दिन को 60 साल लिख दिया और मज़ीद दस साल बढ़ा दिये और उस के लिये जन्नत में (ह़ज़रते) दाऊद (عَلَيْهِ السَّلَام) का पड़ोस भी लिख दिया, लिहाज़ा तुम येह (70 साला) मुद्दत पूरी होने से पहले उस की रूह़ क़ब्ज़ मत करना। (قرۃالعیون مع الروض الفائق، ص398) अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस रह़मत भरे वाक़िए से हमें बे शुमार मदनी फूल चुनने को मिले मसलन ❀ बुज़ुर्गों की ज़ियारत बहुत बड़ी सआदत की बात है ❀ पहले के लोग बुज़ुर्गों की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर होते थे जैसा कि वोह दुल्हा ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा ❀ सदक़ा व ख़ैरात करने से उ़म्र बढ़ती है ❀ जिसे ख़ैरात दी जाए अगर वोह ख़ुश दिली से दुआ करे तो उस की दुआ क़बूल होती है ❀ दूसरे की ज़बान से निकली हुई दुआ हमारे ह़क़ में क़बूल होती है, इस ह़वाले से आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे गिरामी की किताब "اَحسَنُ الوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء" में है : उस ज़बान से दुआ कर

जिस से तू ने गुनाह नहीं किया यानी दूसरे से दुआ करवाओ तो क़बूल होती है। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 111 मुलख़्ख़सन) ❀ येह भी पता चला कि जो ग़ैबत (यानी अकेले) में दुआ करे उस की दुआ क़बूल होती है जैसा कि “اَحْسَنُ الْوِعَاء لِاٰدَابِ الدُّعَاء” में है : दूसरा अगर चुपके से (यानी पीठ पीछे) दुआ करे तो भी क़बूल होती है। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 220 मुल्तक़तन)

हमारे यहां दूसरों से दुआ करवाने का अन्दाज़ कुछ इस त़रह का है कि जब तक नाम ले कर सब के सामने दुआ न की जाए दुआ करवाने वाला मुत़मइन नहीं होता बल्कि बाज़ औक़ात नाराज़ हो जाता है जैसा कि एक बार एक इस्लामी भाई नाम ले कर दुआ न करने के बाइ़स मुझ (यानी अमीरे अहले सुन्नत) से इतना नाराज़ हुए कि दावते इस्लामी का सुन्नतों भरा दीनी माह़ौल छोड़ गए। हुवा कुछ यूं कि उन्हों ने अपनी बीमार बच्ची के लिये दुआ करवाने की ग़रज़ से मुझे पर्ची दी लेकिन मैं ने उस बच्ची की शिफ़ायाबी के लिये सब के सामने दुआ न की, जब मैं उन इस्लामी भाई को मनाने के लिये उन के घर गया तो उन्हों ने कहा : मेरी बच्ची बहुत बीमार थी और मैं ने आप को दुआ के लिये पर्ची दी थी लेकिन आप ने दुआ नहीं की तो मेरा दिल टूट गया, मैं ने उन से पूछा : क्या स्पीकर पर सब के सामने नाम ले कर दुआ करना ज़रूरी है ? क्या ऐसा नहीं हो सकता था कि मैं ने पर्ची पढ़ कर आप की बेटी के लिये चुपके से दुआ कर दी हो जैसा कि मेरी आ़दत है कि जब कोई मुझे दुआ के लिये पर्ची देता है या ज़बानी त़ौर पर कहता है तो मैं चुपके से दुआ कर देता हूं क्यूंकि मुसलमान के लिये इस की ग़ैबत (यानी ग़ैर मौजूदगी) में जो दुआ मांगी जाती है वोह जल्दी क़बूल होती है, लिहाज़ा अगर आप कभी किसी को दुआ के लिये पर्ची दें या ज़बानी त़ौर पर दुआ के लिये कहें और वोह आप के सामने दुआ न करे तो उस के बारे में ऐसा मत सोचें कि वोह बिल्कुल ही दुआ न करेगा।

याद रखिये ! अगर आप ने किसी को दुआ के लिये पर्ची दी और उस ने दुआ न की तो वोह गुनाहगार न होगा क्यूंकि किसी को दुआ के लिये पर्ची देने से उस पर दुआ करना वाजिब नहीं हो जाता अलबत्ता अगर वोह दुआ कर दे तो उस का एह़सान होगा। इसे यूं समझिये ! अगर किसी ने मुझे दुआ के लिये कहा तो अब मैं उस के लिये जान बूझ कर या भूल जाने की वज्ह से दुआ न करूं तो शरअ़न मुझ पर कोई गुनाह न होगा अलबत्ता अगर दुआ करूंगा तो मेरे लिये आख़िरत का फ़ायदा होगा कि दुआ भी एक इ़बादत बल्कि इ़बादत का मग़्ज़ है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : “اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ यानी दुआ इ़बादत का मग़्ज़ है।” (ترمذی، 5/243، حدیث: 3382)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अगर कोई दुआ के लिये कहे तो दुआ कर दीजिये। बाज़ इस्लामी भाइयों से दुआ के लिये कहा जाए तो जवाब मिलता है : हम इस क़ाबिल कहां कि दुआ करें क्यूंकि हम तो गुनाहगार हैं, ह़ालांकि एक रिवायत में है : उस मुंह के साथ दुआ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया। (यानी कोई दूसरा तुम्हारे लिये दुआ करे) (مثنوی مولوی معنوی، دفتر سوم، 3/35) (फ़ज़ाइले दुआ, स. 111)

देखिये ! आदमी अपनी ज़बान से مَعَاذَ اللہ ग़ीबत, चुग़ली, झूट, गाली गलोच, दिल आज़ारी वग़ैरा बहुत से गुनाह कर बैठता है लेकिन दूसरे की ज़बान उस के ह़क़ में पाक होती है क्यूंकि उस ने दूसरे की ज़बान से गुनाह नहीं किया होता लिहाज़ा जब उस पाक ज़बान से उस के ह़क़ में दुआ की जाएगी तो जल्दी क़बूल होगी।

जो लोग कहते हैं कि हम इस क़ाबिल कहां कि दूसरों के लिये दुआ करें क्यूंकि हम गुनाहगार हैं तो ऐसों के लिये अ़र्ज़ है कि मुलाक़ात करते वक़्त हम एक दूसरे को सलाम करते हैं और सलाम भी एक दुआ है। इसी त़रह़ नमाज़ में सलाम फेरते वक़्त “اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ الله यानी तुम पर सलामती और अल्लाह की रह़मत

हो ।” कहते हैं जो कि दुआ है । मुस्तहब येह है कि नमाज़ पढ़ने वाला जब दाईं जानिब सलाम फेरे तो दाईं तरफ़ के नमाज़ियों और फ़रिश्तों को और जब बाईं जानिब सलाम फेरे तो बाईं जानिब के नमाज़ियों और फ़रिश्तों को सलाम करने की निय्यत करे । ग़ौर कीजिये ! जब हम नमाज़ में सलाम फेरते वक़्त फ़रिश्तों को सलाम करने की निय्यत कर के उन्हें सलामती की दुआ देते हैं हालांकि फ़रिश्ते मासूम हैं तो फिर हम आम मुसलमानों के लिये दुआ क्यूं नहीं कर सकते ?

राहे ख़ुदा में माल देने से उ़म्र बढ़ती है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में सुना कि ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत के लिये आने वाले दुल्हे ने जब वापसी पर एक फ़क़ीर को अपनी ज़कात दी और उस का दिल ख़ुश किया तो उस ने उसे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर और जन्नत में ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام का पड़ोसी बनने की दुआ दी । अल्लाह पाक ने फ़क़ीर की दुआ को क़बूल फ़रमाया और यूं जिस दुल्हे की उ़म्र बिल्कुल ख़त्म होने वाली थी और उस की ख़ुशियों के सिर्फ़ छे दिन बाक़ी रह गए थे उस की उ़म्र में 70 साल का इज़ाफ़ा कर दिया गया और मज़ीद येह कि आख़िरत में ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام का पड़ोस भी अ़ता फ़रमा दिया गया ।

इस से पता चला कि अल्लाह पाक की राह में देने से उ़म्र बढ़ती है नीज़ किसी ग़रीब का दिल ख़ुश कर दिया जाए और वोह दुआ करे तो उस की दुआ क़बूल होती है । येह भी मालूम हुवा कि अदब के साथ किसी बुज़ुर्ग की ज़ियारत की जाए तो वोह ख़ुश होते हैं जैसा कि सय्यिदुना दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام उस दुल्हे से ख़ुश हुए थे जभी तो उस की बक़िय्या छे दिन की ज़िन्दगी के बारे में सुन कर रंजीदा हुए थे । येह भी पता चला कि अच्छों से मह़ब्बत, उन से निस्बत और उन की सोह़बत ज़रूर रंग लाती और

दुनिया व आख़िरत के फ़ुयूज़ो बरकात दिलाती है, जैसा कि ह़ज़रते दाऊद عَلَیْہِ السَّلَام से मह़ब्बत करने वाले दुल्हे को उन की बरकत नसीब हुई। क़ुरआने पाक में भी अच्छों की सोह़बत इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया है, चुनान्चे पारह 11 सूरए तौबा की आयत नम्बर 119 में इरशाद होता है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो।

ज़ाहिर है यहां सच्चों से मुराद अहलुल्लाह यानी नेक लोग हैं जो अल्लाह पाक की बारगाह में मक़्बूल हैं। नीज़ ह़दीसे पाक में है : "اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ" यानी आदमी जिस से मह़ब्बत करता है (रोज़े क़ियामत) उसी के साथ होगा।

(بخاری، 4/147، حدیث:6169)

अच्छों की अच्छी तह़रीक

ऐ आशिक़ाने रसूल ! दावते इस्लामी अच्छों की एक अच्छी तन्ज़ीम है और जो इस अच्छी तन्ज़ीम में आता है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! ख़ुद भी अच्छा बन जाता है और दूसरों को भी अच्छा बना देता है। अफ़सोस ! जो इस दीनी तन्ज़ीम में आने के बाद वापस पलट जाता है बाज़ औक़ात वोह बेचारा अच्छाइयों से मह़रूम होने लगता है, मसलन नमाज़ों में सुस्ती करने लग जाता है, सुन्नतों पर अ़मल करने के मुआ़मले में भी सुस्ती का शिकार हो जाता है, उस के सर से इ़मामा शरीफ़ उतर जाता है और مَعَاذَ اللّٰہ चेहरे से दाढ़ी भी ग़ाइब हो जाती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! दावते इस्लामी प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का दर्स देती और उन के दामने करम से वाबस्ता करती है। याद रखिये ! चाहे दावते इस्लामी के किसी भी सत़्ह के ज़िम्मेदार से आप की नाराज़ी हो जाए मगर इस अच्छी तह़रीक को किसी सूरत न छोड़ियेगा, बस अपना येह ज़ेहन बना लीजिये

कि "दावते इस्लामी मेरी तन्ज़ीम है दुनिया की कोई भी ताक़त मुझ से इस प्यारी तन्ज़ीम को नहीं छुड़वा सकती।"

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! दावते इस्लामी अहले हक़ की सब से बड़ी तन्ज़ीम है, आप हक़ीक़ी मानों में दावते इस्लामी वाले बन कर रहें और इस के तरीक़ए कार के मुताबिक़ दीन की ख़िदमत करते रहें, अगर आप के पास दावते इस्लामी के दीनी कामों की कोई ज़िम्मेदारी नहीं या आप बयान करना नहीं जानते या आप इमामा शरीफ़ नहीं सजा पा रहे या ज़ुल्फ़ें नहीं रख पा रहे तो कोई बात नहीं, बस आप अपने घर में फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना शुरूअ़ कर दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه उस की बरकतें आप ख़ुद देख लेंगे। बतौरे तरग़ीब इस ज़िम्न में एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

घर दर्स की बरकत

आकोला (महाराष्ट्र, हिन्द) के एक इस्लामी भाई का घराना बद मज़हबों के साथ तअ़ल्लुक़ात के बाइस बद अ़मली के साथ साथ बद अ़क़ीदगी की तरफ़ भी गामज़न था, एक दिन उन के घर के सब अफ़राद मिल कर T.V देखने में मश्ग़ूल थे कि उन का सतरह (17) साला छोटा भाई जो कि दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आने जाने लगा था, वोह T.V की तरफ़ पीठ किये उल्टा चलता हुवा कमरे में दाख़िल हुवा और अपनी कोई चीज़ अल्मारी से निकाल कर उसी अन्दाज़ पर वापस पलटा। इस की येह अ़जीबो ग़रीब हरकत देख कर वोह ग़ुस्से में चीख़े : क्या तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है जो आज येह अ़जीब बचकाना हरकत कर रहा है! वोह जवाबी कारवाई किये बग़ैर दूसरे कमरे में चला गया। उन की अम्मीजान ने ख़ुलासा किया कि इस ने मुझे बताया था कि मैं ने क़सम खाई है कि आइन्दा T.V की तरफ़ देखूंगा भी नहीं! इन्हों ने ग़ुस्से की वज्ह से छोटे भाई से बात चीत बन्द कर दी।

उस ने घर में सब को इकठ्ठा कर के फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स जारी कर दिया। येह इस में नहीं बैठते थे, एक दिन क़रीब हो कर बैठ गए कि सुनूं तो सही येह दर्स में क्या बताता है, सुना तो बहुत अच्छा लगा, लिहाज़ा रोज़ाना घर दर्स में शरीक होने लगे। रफ़्ता रफ़्ता उन के दिल की सियाही दूर होने लगी, ह़त्ता कि दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी देने लगे। اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! अ़क़्ल ठिकाने आई, बद मज़हबों की सोह़बत से जान छुटी और चेहरे पर दाढ़ी सजाई नीज़ बद अ़क़ीदा मुक़र्रिर की गुमराह कुन कैसिटें जो कि शौक़ से सुना करते थे, अब इस की जगह मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात सुनने लगे।

बुरी सोह़बतों से किनारा कशी कर — और अच्छों के पास आ के पा दीनी माह़ौल
तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का — क़रीब आ के देखो ज़रा दीनी माह़ौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अगर आप दावते इस्लामी के दीगर दीनी काम नहीं कर पा रहे तो कम अज़ कम रोज़ाना अपने घर में फ़ैज़ाने सुन्नत के अबवाब "पेट का क़ुफ़्ले मदीना, फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, फ़ैज़ाने रमज़ान, ग़ीबत की तबाहकारियां, नेकी की दावत" वग़ैरा से दर्स देना शुरूअ़ कर दीजिये, अगर आप को पढ़ना नहीं आता तो कोई बात नहीं अपने बहन भाइयों या अम्मी अब्बू या घर के किसी और फ़र्द से दर्स दिलवा दीजिये। येह भी ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि दर्स ज़ियादा देर तक देना ज़रूरी नहीं बल्कि सिर्फ़ "बिस्मिल्लाह" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से सात मिनट काफ़ी हैं। अगर नमाज़े फ़ज्र के बाद सब घर वाले जमा हो जाएं तो उस वक़्त वरना दोपहर में खाना खाने या चाय पीने के बाद घर के सब अफ़राद को जमा कर के दर्स दीजिये, अगर सब अफ़राद दर्स सुनने के लिये न बैठें तो कोई बात नहीं घर के किसी एक फ़र्द को सुना दीजिये।

देखिये ! अगर आप संजीदा होंगे तो घर के किसी न किसी फ़र्द को आप पर ज़रूर रह़म आएगा और वोह आप का दर्स सुनने के लिये बैठ जाएगा, और अगर आप क़हक़हे लगा कर हंसते होंगे या दर्स न सुनने वालों को झाड़ते और डांटते होंगे तो फिर शायद ही कोई आप का दर्स सुनने के लिये तय्यार हो बल्कि ऐसी सूरत में आप गुनाहगार भी हो सकते हैं।

याद रखिये ! आप का दर्स सुनना घर वालों पर फ़र्ज़ व वाजिब नहीं लिहाज़ा किसी की दिल आज़ारी किये बग़ैर बिल्कुल संजीदगी के साथ दर्स दीजिये اِنْ شَآءَاللہ इस की बरकत से घर वालों के दिल पिघल जाएंगे, बिल ख़ुसूस मां ख़ुद भी दर्स सुनेगी और घर के दीगर अफ़राद को भी जमा कर लेगी क्यूंकि वोह पूरे घर की मालिका होती है तो यूं आप का घर दर्स अच्छी त़रह़ जारी हो जाएगा।

"नेक आमाल" के रिसाले में भी घर दर्स की तरग़ीब दिलाई गई है लेकिन इस के बा वुजूद इस्लामी भाई इस ह़वाले से सुस्ती का शिकार हो जाते हैं। जो इस्लामी भाई घर दर्स में सुस्ती का मुज़ाहरा करते हैं उन्हें आ़म त़ौर पर घर वालों की त़रफ़ से क़ाफ़िलों में सफ़र की इजाज़त भी नहीं मिलती। अगर आप घर दर्स शुरूअ़ कर देंगे तो اِنْ شَآءَاللہ घर वाले आप से मुत़मइन हो जाएंगे और आप के लिये क़ाफ़िलों में सफ़र की राहें कुशादा हो जाएंगी।

दुआ़ए अ़त्तार

ऐ अल्लाह ! जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहनें घर दर्स देते हैं उन सब को और मुझे जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा। नीज़ रहती दुनिया तक जो जो दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता होते हुए घर दर्स देता रहे उस के ह़क़ में भी मेरी येह दुआ़ क़बूल फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ऐ आशिक़ाने रसूल ! घर दर्स शुरूअ़ करने का येह मत़लब नहीं कि आप दावते इस्लामी के दीगर दीनी कामों को छोड़ दें बल्कि उन्हें भी जारी रखें क्यूंकि हर दीनी काम की अहमिय्यत अपनी जगह है। देखिये ! अगर आप क़ाफ़िलों में सफ़र करते रहेंगे तो इस से आप में घर दर्स का जज़्बा बढ़ेगा, अगर आप "नेक आमाल" का रिसाला पुर करते रहेंगे तो आप में तक़्वा पैदा होगा, अगर आप अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दावत में शरीक होते रहेंगे या मस्जिद दर्स या चौक दर्स देते रहेंगे तो इस की बरकत से आप के अ़लाक़े में नेकी की दावत आ़म होगी लिहाज़ा घर दर्स के साथ साथ दावते इस्लामी के दीगर दीनी कामों को भी जारी रखें और उन्हें बढ़ाते चले जाएं।

वालिदैन का अदब कीजिये

घर दर्स और दावते इस्लामी के दीगर दीनी कामों को करने के साथ साथ वालिदैन का ख़ूब अदब कीजिये, उन के हाथ पांव चूमिये, बिल ख़ुसूस वालिदा के पांव चूमिये कि एक रिवायत में है : जिस ने अपनी वालिदा का पांव चूमा तो ऐसा है जैसे उस ने जन्नत की चौखट को बोसा दिया। (درمختار، 9/606) ऐसा करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ वालिदैन की आप से मह़ब्बत मज़ीद बढ़ेगी, उन में इत़मीनान की कैफ़िय्यत पैदा होगी और उन का येह ज़ेहन बनेगा कि हमारा बेटा दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में अच्छी जगह जा रहा है क्यूंकि पहले तो वोह हमें झाड़ कर जवाब देता था और सीधे मुंह बात नहीं करता था लेकिन अब ماشاءاللہ निगाहें नीची किये सलाम करते हुए घर में दाख़िल होता है और हमारे हाथ पांव भी चूम लेता है। देखिये ! जब मां बाप आप से मुत़मइन होंगे तो ख़ुद कहेंगे : बेटा : क़ाफ़िलों में सफ़र किया करो, बेटा ! घर दर्स थोड़ा मज़ीद बढ़ा दो और रोज़ाना बिला नाग़ा दर्स दे कर हमें अल्लाह पाक और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी बातें सुनाया करो वग़ैरा।

लम्बी उ़म्र पाने की ख़्वाहिश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान के शुरूअ़ में ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर होने वाले एक दुल्हे का वाक़िआ़ सुना कि ज़कात देने की बरकत से उस की उ़म्र छे दिन से बढ़ा कर साठ साल कर दी गई और उस में मज़ीद दस साल का इज़ाफ़ा भी कर दिया गया। आज कल भी बहुत से लोग लम्बी उ़म्र पाने के लिये तरसते और उस के लिये ख़ूब एह़तियातें करते हैं। ऐसा लगता है कि मरने के लिये कोई तय्यार नहीं यहां तक कि 100 साल का बूढ़ा भी मज़ीद जीने की ख़्वाहिश लिये बैठा है। बहुत से बूढ़े दुआ़एं मग़्फ़िरत करवाने के बजाए तंगदस्ती दूर होने और रोज़ी में बरकत की दुआ़एं करवाते हैं, यूंही सरमायादार ह़ज़रात भी रोज़ी में बरकत के लिये दुआ़ करवाते हैं ह़ालांकि अल्लाह पाक ने उन्हें कसीर मालो दौलत से नवाज़ा होता है मगर वोह इस त़रह़ की दुआ़एं करवाते नज़र आते हैं कि "हमारा फ़ुलां प्रोजेक्ट पूरा हो जाए, हम ने फ़ुलां इ़मारत की तामीर शुरूअ़ कर रखी है वोह मुकम्मल हो जाए, हमारे घर का काम रुका हुवा है वोह पूरा हो जाए वग़ैरा वग़ैरा।" ऐसों को सोचना चाहिये कि मकान टूटता फूटता और बनता रहेगा जब कि मकान वाला क़ब्र में उतर जाएगा लिहाज़ा जन्नत के मह़ल्लात की तलाश में रहना चाहिये।

देखिये ! दुनिया में सर छुपाने की जगह बिल आख़िर मिल ही जाती है लेकिन अगर हमारे पास किराए का मकान हो तो हमारी ख़्वाहिश और दुआ़ होती है कि हमें मालिकाना हुक़ूक़ मिल जाएं, अगर छोटा मकान हो तो हम बड़े मकान की तमन्ना और ख़्वाहिश रखते हैं तो यूं हम दुनिया के प्लॉटों और मकानों के लिये मारे मारे फिरते और ख़ूब दुआ़एं करवाते हैं। ऐ काश ! जन्नत के आ़लीशान मह़ल्लात की त़रफ़ भी हमारा रुख़ हो जाए, ऐ काश ! प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें जन्नत का कोई ह़िस्सा नसीब हो जाए।

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे

फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

क़रीबी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक की बरकत

ऐ आशिक़ाने रसूल ! नेकियां ज़ियादा करने की निय्यत से लम्बी उ़म्र की तमन्ना करने में कोई ह़रज नहीं है, लम्बी उ़म्र पाने का एक नुस्ख़ा येह भी है कि क़रीबी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक इख़्तियार किया जाए, चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : क़रीबी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, माल को बहुत बढ़ाने वाला, आपस में बहुत मह़ब्बत दिलाने वाला और उ़म्र को ज़ियादा करने वाला है। (معجم اوسط، 6/11، حدیث: 7810)

इस ह़दीसे पाक से मालूम हुवा रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक इख़्तियार करने से रोज़ी में बरकत होती है, आपस में मह़ब्बत क़ाइम होती है और उ़म्र बढ़ती है लिहाज़ा अगर आप का किसी से रिश्ता टूट गया हो तो फिर से बह़ाल कर लीजिये।

बद क़िस्मती से आज कल झट पट में क़रीबी रिश्ते टूट जाते हैं ! अगर आप की अम्मी और ख़ाला के दरमियान लड़ाई का सिल्सिला हो तो उस का येह मत़लब नहीं कि आप भी अपनी ख़ाला से लड़ पड़ें, उन की ग़ीबतें करें, उन के बुरे नाम रखें बल्कि आप अपनी ख़ाला से रिश्ता जोड़ लें और अगर इस बात का ख़ौफ़ हो कि अम्मी को पता चलेगा तो घर का माह़ौल ख़राब होगा तो अम्मी से छुप कर रिश्ता जोड़ लें। देखिये ! आप की अम्मी और ख़ाला आपस में बहनें हैं, अल्लाह पाक चाहेगा तो दोनों में सुल्ह़ हो जाएगी मगर आप को येह ह़क़ नहीं पहुंचता कि ख़ाला को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दें। याद रखिये ! ख़ाला आप की ख़ूनी रिश्तेदार और मह़ारिम में से है। इसी त़रह़ अगर आप की अम्मी और नानी जान की आपस में ठन जाए तो आप अपनी नानीजान से हरगिज़ तअ़ल्लुक़ात ख़त्म न करें। यूंही अगर त़लाक़ की वज्ह से मां बाप में जुदाई हो जाए और मां औलाद से कहे कि अपने

वालिद से मुलाक़ात के लिये मत जाया करो तब भी औलाद को मुलाक़ात के लिये जाना पड़ेगा। अगर्चे तलाक़ के बाद औरत अपने शौहर की ज़ौजिय्यत से निकल जाती है लेकिन औलाद का अपने वालिद से रिश्ता क़ाइम रहता है, येही वज्ह है कि मां बाप में तलाक़ हो जाने के बाद अगर बाप दुनिया से रुख़्सत हो तब भी औलाद को उस की विरासत में से हिस्सा मिलता है।

पता चला मां बाप में तलाक़ हो जाने के बाद भी बाप के हुक़ूक़ अपनी औलाद पर बाक़ी रहते हैं, ऐसी सूरत में मां औलाद को लाख बार कहे कि अपने बाप से रिश्ता तोड़ दो तब भी औलाद को अपने बाप के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना होगा, अगर मां के कहने पर औलाद अपने बाप से मिलना जुलना छोड़ेगी और उस से दूरी इख़्तियार कर के उसे तड़पाएगी तो ऐसा करना बेचारे बाप पर ज़ुल्म होगा और औलाद गुनाहगार होगी। औलाद के अपने वालिद से मिलने जुलने के बाइ़स अगर मां नाराज़ हो और उसे तक्लीफ़ पहुंचे तो येह औलाद की त़रफ़ से अपनी मां को तक्लीफ़ पहुंचाना नहीं कहलाएगा बल्कि मां का ख़ुद अपने आप को तक्लीफ़ पहुंचाना कहलाएगा। याद रखिये ! मां बाप शरीअ़त के दायरे में रहते हुए औलाद को जो भी हुक्म दें औलाद उसे माने और उस की पैरवी करे और अगर शरीअ़त के ख़िलाफ़ हुक्म दें तो औलाद उसे तस्लीम न करे।

पहल कर के रिश्ता जोड़ लीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप ने ख़ुदा नख़्वास्ता बिला इजाज़ते शरई अपने मां बाप, बेटा बेटी, बहन भाई, ख़ाला ख़ालू, मामूं, नाना नानी, दादा दादी, पोता पोती, नवासा नवासी या दीगर रिश्तेदारों से रिश्ता तोड़ रखा है तो पहल कर के उन से रिश्ता जोड़ लीजिये। अगर किसी दीनी उ़ज़्र की वज्ह से रिश्ता

तोड़ रखा है मसलन बाप काफ़िर है तो इस ह़वाले से उ़लमाए किराम से मश्वरा कर लीजिये। याद रखिये ! काफ़िर बाप से भी शरीअ़त के दायरे में रहते हुए हुस्ने सुलूक से पेश आना होगा और उस का हुक्म मानना होगा अलबत्ता जिन मुआ़मलात में शरीअ़त ने हुक्म मानने से मना किया हो उन में उस का हुक्म नहीं माना जाएगा मसलन अगर बाप काफ़िर होने के साथ साथ अन्धा भी है और औलाद से कहता है कि मुझे गिर्जा घर छोड़ आओ तो अब उस की इत़ाअ़त नहीं की जाएगी और अगर कहता है कि गिर्जा घर से अपने घर ले चलो तो अब उस की इत़ाअ़त करनी होगी।

(تفسیر روح البیان، پ20، العنکبوت، تحت الآیۃ: 8، 6/450 ملخصًا)

जिन लोगों के मां बाप مَعَاذَاللہ ! काफ़िर हैं उन्हें उ़लमाए किराम से पूछ लेना चाहिये कि काफ़िर मां बाप से कैसा सुलूक करना है ? इस के साथ साथ क़ाफ़िलों में भी सफ़र करते रहना चाहिये कि इस की बरकत से इ़ल्मे दीन सीखने का जज़्बा मिलता है और दीनी किताबों को पढ़ने और उ़लमाए किराम से राबित़ा रखने का ज़ेहन बनता है। याद रहे ! ऐसा नहीं कि आप पूरे का पूरा इस्लाम सिर्फ़ तीन दिन के क़ाफ़िले में सीख जाएंगे अलबत्ता कुछ न कुछ इ़ल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ ज़रूर मिलेगा और दीनी किताबों के मुत़ालए का शौक़ बढ़ेगा।

सिलए रह़मी की बरकत

ऐ आशिक़ाने रसूल ! रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक की क्या बात है ! ह़दीसे पाक में है : बेशक सब नेकियों में जल्द तर सवाब में सिलए रह़मी है यहां तक कि घर वाले फ़ासिक़ भी हों तो उन के माल ज़ियादा होते हैं और उन के शुमार बढ़ते हैं जब कि आपस में सिलए रह़मी करें। (معجم اوسط، 1/306، حدیث: 1092)

बिल फ़र्ज़ ! अगर مَعَاذَاللہ वालिदैन या बहन भाई या बाल बच्चे बे नमाज़ी हों या फ़िल्में ड्रामे देखते हों या बे पर्दगियां करते हों या गाने बाजे सुनते हों या दाढ़ी मुन्डाते हों यानी फ़ासिक़ हों तब भी उन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना होगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां दुनिया में सिलए रहमी के अच्छे फल मिलते हैं जैसा कि उ़म्र लम्बी हो जाना, माल में बरकत होना वग़ैरा वहां आख़िरत में भी اِنْ شَآءَاللہ इस का ख़ूब सवाब हाथ आएगा।

सिलए रहमी से मोह़ताजी दूर होती है

सिलए रहमी की बरकतों में से एक बरकत येह भी है कि इस से मोह़ताजी दूर होती है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : कोई घर वाले ऐसे नहीं कि आपस में सिलए रहमी करें फिर मोह़ताज हो जाएं। (ابن حبّان، 1/333، حدیث:441)

जब तक घर वालों में मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम रहेगी तंगदस्ती उन के क़रीब नहीं आएगी। आज हर एक बे रोज़गारी और तंगदस्ती की शिकायत करता नज़र आता है मगर येह नहीं देखता कि घर वालों में मह़ब्बत नहीं है, आपस में लड़ाइयां और नाचाक़ियां हैं, आए दिन वालिदैन की लड़ाई होती रहती है, भाई बहनों की आपस में नहीं बनती वग़ैरा वग़ैरा। जब ऐसा होगा तो मोह़ताजी कैसे दूर होगी ? अलमिया येह है कि अगर कारोबार ठप हो जाए तो आ़म तौ़र पर लोग येही समझते हैं कि किसी ने जादू करवा दिया है और फिर आ़मिलीन के पास जाते हैं तो आ़मिल ह़ज़रात फ़ौरन कह देते हैं कि असरात या बन्दिश है। इसी त़रह़ अगर घर में लड़ाई हो या बच्चा बीमार हो जाए तो गुमान किया जाता है कि किसी क़रीबी रिश्तेदार ने जादू करवा दिया है बल्कि बाज़ बेवुक़ूफ़ तो यहां तक कहते सुनाई देते हैं कि मेरे बाप ने

मुझ पर जादू करवा दिया है और बाज़ औक़ात बाप कह रहा होता है कि बेटे ने मुझ पर जादू करवाया है। याद रखिये ! सब लोग जादूगर नहीं होते, اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! मुआ़शरे में ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले अफ़राद भी मौजूद हैं।

शैत़ान घर में दाख़िल नहीं होगा

देखिये ! सिर्फ़ जादू ही परेशानियों का सबब नहीं होता हमारी कोताहियों की वज्ह से भी परेशानियां और मुश्किलात आती हैं मसलन ह़दीसे पाक में है : जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो बेशक जब तुम में से कोई घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करता है तो शैत़ान उस घर में दाख़िल नहीं होता। (مستدرک،3/166،حدیث:3567مفہوماً) लिहाज़ा बिस्मिल्लाह पढ़ कर घर वालों को सलाम करते हुए घर में दाख़िल हों ताकि शैत़ान दाख़िल न हो सके। इसी त़रह़ गन्दी जगहों और इस्तिन्जा ख़ानों में भी ख़बीस जिन्नात रहते हैं तो उन से बचने के लिये हमें येह दुआ़ सिखाई गई है : "بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ यानी अल्लाह के नाम से ऐ अल्लाह ! मैं नापाकी और शैत़ानों से तेरी पनाह मांगता हूं।" (مصنف ابن ابی شیبہ،7/148، حدیث:5)लिहाज़ा इस्तिन्जा ख़ाने (यानी वॉशरूम) में दाख़िल होने से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ शरीर जिन्नात से ह़िफ़ाज़त होगी।

आज कल लोगों ने त़रह़ त़रह़ के अश्आ़र और पूरे पूरे मज़ामीन रटे होते हैं, नीज़ किसी ने M.B.A किया होता है तो किसी ने M.B.B.S, कोई एडवोकेट होता है तो कोई कुछ और, मगर अफ़सोस ! बहुत सों को वॉशरूम जाने की दुआ़ याद नहीं होती, अगर किसी को याद होती है तो दुरुस्त त़रीक़े से याद नहीं होती और दुरुस्त करवाने के लिये किसी आ़लिम या क़ारी साहिब को सुनाने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती।

अगर आप वॉशरूम जाते वक़्त येह दुआ नहीं पढ़ेंगे तो अन्दर मौजूद जिन्नात आप को परेशानी में मुब्तला कर सकते हैं और फिर आप इ़लाज के लिये आ़मिलीन के पास चक्कर लगाते रहेंगे और बाज़ औक़ात आ़मिल को भी पता नहीं चलेगा कि येह जिन्न चिमटा कहां से है ? अगर आप दुआ पढ़ कर वॉशरूम जाएंगे तो जिन्नात से आप की हि़फ़ाज़त होगी बल्कि जिन्नात सत्र भी नहीं देख पाएंगे क्यूंकि दुआ के शुरूअ़ में "बिस्मिल्लाह" के अल्फ़ाज़ हैं और अह़ादीसे मुबारका में ऐसे मज़ामीन मौजूद हैं कि "अगर बिस्मिल्लाह पढ़ कर सत्र खोलेंगे तो सरकश जिन्नात सत्र नहीं देख पाएंगे।" (ترمذی،2/113،حدیث:606ملخصًا)

ख़ुद कर्दा रा इ़लाजे नीस्त

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई बग़ैर दुआ पढ़े वॉशरूम जाए और चाहे कि शरीर जिन्नात की शरारतों से भी मह़फ़ूज़ रहे तो मक़ूला है : "ख़ुद कर्दा रा इ़लाजे नीस्त यानी अपने हाथों से मुसीबत ओढ़ लेने वालों का कोई इ़लाज नहीं।" इसे यूं समझिये कि अगर कोई ज़ोर ज़ोर से अपना सर दीवार में मारता चला जाए और येह भी चाहे कि सर न फटे तो ऐसा नहीं हो सकता बल्कि दीवार में सर मारने से सर भी फटेगा और टांके भी लगेंगे और अगर सर ज़ोर से दीवार में मारेगा तो भेजा भी निकलेगा और जान भी जाएगी।

कोई मरज़ ला इ़लाज नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक अल्लाह पाक चाहता है तो तावीज़ात व अ़मलियात असर करते हैं वरना नहीं करते। इसी त़रह़ दवा में भी बज़ाते ख़ुद कोई तासीर नहीं होती अल्लाह पाक चाहता है तो शिफ़ा मिलती है वरना नहीं मिलती। आज कल डॉक्टर ह़ज़रात इ़लाज कर कर के मरीज़ का दम निकाल देते हैं

और फिर आख़िर में कहते हैं कि इस मरज़ का कोई इलाज़ नहीं ह़ालांकि अह़ादीसे मुबारका में ऐसे मज़ामीन मौजूद हैं कि "अल्लाह पाक ने ऐसी कोई बीमारी नहीं उतारी जिस के साथ उस का इलाज न उतारा हो।" (بخاری،4/16،حدیث:5678)

जिस त़रह़ बाज़ डॉक्टर येह कहते सुनाई देते हैं कि फ़ुलां मरज़ का कोई इलाज़ नहीं इसी त़रह़ बाज़ लोगों को जब कोई दीनी बात बताई जाए तो कहते हैं : "साह़िब ! ऐसा तो किसी ह़दीस में नहीं है।" ऐसों के लिये अ़र्ज़ है कि क्या सारी ह़दीसें उन की नज़र से गुज़री हुई हैं ? यक़ीनन नहीं, लिहाज़ा उन्हें इस त़रह़ कहना चाहिये कि ऐसी कोई ह़दीस हमारी नज़र से नहीं गुज़री। इसी त़रह़ डॉक्टरों को भी येही कहना चाहिये कि "हमारे पास फ़ुलां मरज़ का इलाज नहीं है या अभी तक डॉक्टरों को फ़ुलां मरज़ का इलाज नहीं मिल सका" ऐसा हरगिज़ न कहें कि फ़ुलां मरज़ का इलाज ही नहीं है।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमें अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रह़मी और नेक सुलूक से पेश आना चाहिये कि इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه हमें बहुत से फ़ायदे ह़ासिल होंगे। तरग़ीब के लिये चन्द अह़ादीसे मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

सिलए रह़मी

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सिलए रह़मी, ख़ुश अख़्लाक़ी और पड़ोसियों से नेक सुलूक, शहरों को आबाद और उ़म्रों को ज़ियादा करते हैं। (مسند امام احمد،9/504،حدیث:25314)

बुरी मौत और आफ़ात से नजात

सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नेक सुलूक के काम, बुरी मौतों, आफ़तों और हलाकतों से बचाते हैं और दुनिया में एह़सान वाले आख़िरत में भी एह़सान वाले होंगे। (جامع الاحادیث،6/86،حدیث:13564)

सब से पहले जन्नत में जाने वाले

मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : भलाइयों के काम बुरी मौतों से बचाते हैं, पोशीदा ख़ैरात (यानी छुप कर ख़ैरात देना) रब का ग़ज़ब बुझाती है, रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक उ़म्र में बरकत (का ज़रीआ़) है, हर नेक सुलूक सदक़ा है, जो दुनिया में एह़सान वाले हैं वोही आख़िरत में एह़सान पाएंगे, जो दुनिया में बदी वाले हैं वोही आख़िरत में बदी देखेंगे और सब से पहले जो जन्नत में जाएंगे वोह अच्छा बरताव करने वाले हैं।

(معجم اوسط، 4/311، حدیث:6086)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाइये اِنْ شَآءَاللّٰه सिलए रह़मी, ख़ुश अख़्लाक़ी और पड़ोसियों के साथ नेक सुलूक इख़्तियार करने का ज़ेहन बनेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	01	पहल कर के रिश्ता जोड़ लीजिये	13
लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा	01	सिलए रह़मी की बरकत	14
राहे ख़ुदा में माल देने से उ़म्र बढ़ती है	05	सिलए रह़मी से मोह़ताजी दूर होती है	15
अच्छों की अच्छी तह़रीक	06	शैत़ान घर में दाख़िल नहीं होगा	16
घर दर्स की बरकत	07	ख़ुद कर्दा रा इ़लाजे नीस्त	17
दुआ़ए अ़त्तार	09	कोई मरज़ ला इ़लाज नहीं	17
वालिदैन का अदब कीजिये	10	सिलए रह़मी	18
लम्बी उ़म्र पाने की ख़्वाहिश	11	बुरी मौत और आफ़ात से नजात	18
क़रीबी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक की बरकत	12	सब से पहले जन्नत में जाने वाले	19
		❀❀❀	❀

3 रूहानी इलाज

(1) “ یَاوَارِثُ ” जो इस का विर्द करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ उस की उम्र लम्बी होगी। (मदनी पन्ज सूरह, स. 297)

(2) “ یَاقُدُّوْسُ ” का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَاللّٰہ थकन से महफ़ूज़ रहेगा।

(40 रूहानी इलाज मअ़ तिब्बी इलाज, स. 3)

(3) “ یَامُهَيْمِنُ ” 29 बार जो कोई ग़मज़दा रोज़ाना पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰہ उस का ग़म दूर हो, नीज़ اِنْ شَآءَاللّٰہ आफ़तों और बलाओं से भी महफ़ूज़ रहे।

(40 रूहानी इलाज़ मअ़ तिब्बी इलाज, स. 3)

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025